Cognitive Thinking: An International Journal of Interdisciplinary Studies
Vol.-2, Issue-1 (January-March 2026), pp.22-28, ISSN: 3107-5088,www.cognitivethinking.in

सार्क तथा बिम्सटेक: तुलनात्मक क्षेत्रीय रूपरेखा

डॉ. रोहताश
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
मुलतानीमल मोदी कॉलेज, मोदीनगर, गाजियाबाद, उ० प्र० - 201204
(सम्बद्ध: चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उ० प्र०, भारत)
ई-मेल - rohtashtheone@gmail.com

Article: Received: 19/01/2026, Accepted: 10/02/2026, Published:12/02/2026.
D.O.I. https://doi.org/10.5281/zenodo.18626822.
© 2025 The Author(s). This is an Open Access article/ Journal distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are properly credited. (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

सारांश: सार्क (SAARC) तथा बिम्सटेक (BIMSTEC) दोनों क्षेत्रीय सहयोग के महत्वपूर्ण संगठना हैं जो दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में सतत विकास व स्थिरता हेतु कार्य करते हैं। **08 दिसम्बर 1985 ई०** में स्थापित सार्क, दक्षिण एशियाई समेकन पर केंद्रित आठ दक्षिण एशियाई राष्ट्रों का संगठन है, जिसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक-आर्थिक विकास क्षेत्रीय शांति तथा स्थिरता सुनिश्चित करना है। यद्यपि भारत-पाकिस्तान के मध्य व्याप्त तनाव इसकी प्रगति में बाधक है। वहीं दूसरी ओर, **06 जून 1997 ई०** में स्थापित बिम्सटेक सात सदस्य देशों के साथ दक्षिण व दक्षिण-पूर्व एशिया को जोड़ता है, जोकि सार्क की कुछ भू-राजनीतिक जटिलताओं से अप्रभावित रहते हुए बंगाल की खाड़ी के निकटवर्ती क्षेत्र में व्यावहारिक, क्षेत्रीय-आधारित तकनीकी तथा आर्थिक सहयोग पर केंद्रित है। इन दोनों संगठनों की संरचना, सदस्यता एवं कार्यप्रणाली में महत्वपूर्ण भेद हैं। सार्क को भारत-पाकिस्तान द्विपक्षीय तनावों तथा सर्वसम्मति आधारित निर्णय प्रणाली के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जबकि इसके विपरीत बिम्सटेक का लचीला एवं क्षेत्रीय नेतृत्व वाला तन्त्र अधिक कार्यक्षम सहयोग की संभावना प्रदान करता है। यद्यपि, दोनों के संस्थागत संसाधनों की सीमाएँ स्पष्ट हैं। भारत दोनों संगठनों में मुख्य भूमिका निभाता है, तथा उसकी सामंजस्यपूर्ण भूमिका दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग को सुदृढ़ता प्रदान कर सकती है। निष्कर्षत: सार्क तथा बिम्सटेक दोनों के समन्वित सशक्तिकरण से क्षेत्रीय एकीकरण एवं विकास को प्रोत्साहन मिल सकता है।

मुख्य शब्द: सार्क, बिम्सटेक, चार्टर, शिखर सम्मेलन, सचिवालय, साफ्टा, भारत-पाकिस्तान।

प्रस्तावना : आधुनिक वैश्विक व्यवस्था में क्षेत्रीय संगठन सहयोग, शांति, आर्थिक विकास तथा सामाजिक प्रगति को प्रोत्साहन देने हेतु महत्वपूर्ण साधन बन गए हैं। एशिया के प्रमुख क्षेत्रीय संगठनों में **दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क)** एवं **बंगाल की खाड़ी बहुक्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिम्सटेक)** सम्मिलित हैं।

यद्यपि दोनों संगठनों के सदस्य देशों में अतिव्यापक सम्मिलन दृष्टिगोचर होता है, तथापि उनके संचालन व प्रशासन के दृष्टिकोण भिन्न हैं। **1985 ई०** में स्थापित सार्क दक्षिण एशिया का सबसे पुराना तथा व्यापक क्षेत्रीय संगठन है, जिसमें **आठ सदस्य** राष्ट्र हैं, जोकि व्यापक क्षेत्रीय एकीकरण हेतु प्रतिबद्ध हैं। वहीं दूसरी ओर, **1997 ई०** में स्थापित बिम्सटेक एक आधुनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जोकि **सात सदस्य** राष्ट्रों के मध्य बहुक्षेत्रीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग पर केंद्रित है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन दोनों संगठनों के ढांचे, उद्देश्यों, उपलब्धियों तथा चुनौतियों का तुलनात्मक अध्ययन करने के साथ ही यह मूल्यांकन भी किया गया है कि क्षेत्रीय विकास व स्थिरता में ये दोनों संगठन किस सीमा तक सहयोग कर पाते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा गठन

सार्क की उत्पत्ति एवं विकास: दक्षिण एशियाई देशों के मध्य व्यवस्थित संवाद तथा सहयोग हेतु सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) की स्थापना **08 दिसम्बर 1985 ई०** को बांग्लादेश की राजधानी **ढाका** में सार्क चार्टर पर हस्ताक्षर के माध्यम से हुआ। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामूहिक समाधान सुनिश्चित करना था। इसके संस्थापक **सात सदस्य** राष्ट्रों में **भारत, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान** एवं **श्रीलंका** सम्मिलित थे। **अप्रैल 2007** ई० में भारत के **नई दिल्ली** में आयोजित सार्क के **14वें शिखर सम्मेलन** में **अफगानिस्तान** भी इसका **आठवाँ सदस्य** बना। सार्क का लक्ष्य गरीबी उन्मूलन, सामाजिक विकास, आर्थिक वृद्धि, तथा सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा देना है।

बिम्सटेक की उत्पत्ति एवं विकास: बिम्सटेक का प्रारम्भ **06 जून 1997 ई०** को **बैंकॉक घोषणा** के माध्यम से **बांग्लादेश, भारत, श्रीलंका** तथा **थाईलैंड** आर्थिक सहयोग (BIST-EC) के रूप में हुई, जिसमें दिसम्बर 1997 ई० में **म्यांमार** के सम्मिलित होने के पश्चात इसका नाम **'BIMST-EC'** हो गया। तदुउपरान्त **फरवरी 2004 ई०** में **नेपाल** एवं **भूटान** के सम्मिलित हो जाने पर इसका नाम परिवर्तित कर **"BIMSTEC"** (बंगाल की खाड़ी बहुक्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल) किया गया। **2004 ई०** में थाईलैंड की राजधानी **बैंकाक** में आयोजित इसके **प्रथम शिखर सम्मेलन** में बिम्सटेक के व्यापक चार्टर को अंगीकार किया गया। यह संगठन क्षेत्र की भू-राजनीतिक जटिलताओं से बचते हुए एक व्यवहारिक सहयोग मंच के रूप में विकसित हुआ, जो मुख्यतः बंगाल की खाड़ी क्षेत्र पर केंद्रित है।

संरचनात्मक तथा संस्थागत रूपरेखा

सार्क की संगठनात्मक संरचना: दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) की संगठनात्मक संरचना निम्नलिखित हैं -

I. शिखर सम्मेलन - सार्क की सर्वोच्च निर्णयकर्ता संस्था इसके सदस्यों राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों का शिखर सम्मेलन है, जोकि सामान्यत: वार्षिक होता है।

II. **विदेश मंत्रियों का सम्मलेन** - यह सदस्य राष्ट्रों के विदेश मंत्रियों का एक महत्वपूर्ण मंच है, जोकि कार्यान्वयन एवं समन्वय के दायित्व का निर्वाहन करता है।

III. **स्थाई समिति** - यह सदस्य राष्ट्रों के विदेश सचिवों की समिति होती है। यह सदस्य राष्ट्रों के विदेश मंत्रियों के सम्मेलन हेतु प्रबन्ध तथा समन्वय का कार्य करती है।

IV. **तकनीकी समितियाँ** - कृषि, पर्यावरण, सामाजिक विकास और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों हेतु विशिष्ट कार्य समूह एवं तकनीकी समितियाँ स्थापित की गई हैं।

V. **सचिवालय** - सार्क का स्थायी सचिवालय **नेपाल** की राजधानी **काठमांडू** में स्थित है तथा यह दिन-प्रतिदिन के प्रशासनिक कार्यों का सम्पादन करता है।

बिम्सटेक की संगठनात्मक संरचना: बिम्सटेक (बंगाल की खाड़ी बहुक्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल) का संरचनात्मक प्रतिमान क्षेत्रीय एवं तकनीकी सहयोग पर केंद्रित है। इसकी संगठनात्मक संरचना निम्नलिखित हैं :

I. **शिखर सम्मेलन** - बिम्सटेक का सर्वोच्च निकाय इसका शिखर सम्मेलन है, जिसमें इसके सदस्य राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्ष/शासनाध्यक्ष सम्मिलित होते हैं।

II. **मंत्रीस्तरीय सम्मेलन** - इस सम्मेलन में सदस्य राष्ट्रों के विदेश मंत्री सम्मिलित होते हैं, जोकि नियमित रूप से होता है

III. **क्षेत्रीय मंत्रीस्तरीय सम्मेलन** - यह विशिष्ट क्षेत्रों में गतिविधियों के संचालन हेतु उत्तरदायी क्षेत्र मंत्रियों का सम्मेलन होता है।

IV. **वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मलेन** - इसमें सदस्य राष्ट्रों के विदेश मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारीगण भाग लेते हैं। बिम्सटेक के क्षेत्रीय मंत्री तथा विशेषज्ञ समूह विषयों को विस्तारित करते हैं।

V. **सचिवालय** - बिम्सटेक का सचिवालय **बांग्लादेश** की राजधानी **ढाका** में स्थित है, जोकि सम्पूर्ण संगठन द्वारा निष्पादित कार्यों में समन्वय करता है।

VI. **सात प्राथमिकता स्तम्भ** - बिम्सटेक में सहयोग हेतु इसके लक्ष्यों को सात क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। इसका प्रत्येक सदस्य राष्ट्र कुछ क्षेत्रों का नेतृत्व करता है, जिसका विवरण निम्नांकित है:

- **सुरक्षा** - भारत
- **व्यापार, निवेश तथा विकास** - बांग्लादेश
- **कृषि एवं खाद्य सुरक्षा** - म्यांमार
- **पीपुल टू पीपुल सम्पर्क** - नेपाल
- **परिवहन तथा संचार (कनेक्टिविटी)** - थाईलैण्ड
- **पर्यावरण व प्राकृतिक आपदा प्रबंधन** - भूटान
- **विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार** - श्रीलंका

सदस्यता तथा भौगोलिक क्षेत्र

सार्क के सदस्य व क्षेत्रफल: सार्क संगठन में - **भारत, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका** तथा **अफगानिस्तान** - कुल **आठ सदस्य** राष्ट्र सम्मिलित हैं। इसका मुख्यालय नेपाल की राजधानी **काठमांडू** में स्थित है। इसके सदस्य राष्ट्रों का कुल क्षेत्रफल समस्त संसार के भौगोलिक क्षेत्र का लगभग **03 प्रतिशत** है, जिसमें विश्व की **21 प्रतिशत** अर्थात लगभग 1 अरब 97 करोड़ जनसंख्या निवास करती है। सार्क क्षेत्र का आर्थिक आकार लगभग 3 लाख 90 हज़ार करोड़ रुपये है, जोकि विश्व की कुल अर्थव्यवस्था का लगभग **3.9 प्रतिशत** है। इसका क्षेत्र दक्षिण एशिया तक ही सीमित है तथा इसमें भारत-पाकिस्तान विवाद सहित कई अन्य द्विपक्षीय तनाव सम्मिलित हैं।

बिम्सटेक के सदस्य व क्षेत्रफल: बिम्सटेक संगठन में - **भारत, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, म्यांमार, श्रीलंका** तथा **थाईलैंड** - कुल **सात सदस्य** राष्ट्र सम्मिलित हैं। यह दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया को जोड़ता है। इसके सदस्य देशों की जनसंख्या 1 अरब 73 करोड़ से अधिक है। बिम्सटेक का आर्थिक आकार लगभग 5 लाख 20 हजार करोड़ रुपए है। बिम्सटेक में पाकिस्तान के सम्मिलित नहीं होने से इस संगठन में राजनीतिक तनाव अपेक्षाकृत कम है।

उद्देश्य तथा कार्यक्षेत्र

सार्क के उद्देश्य व कार्यक्षेत्र: सार्क का लक्ष्य दक्षिण एशियाई लोगों के कल्याण को बढ़ावा देना, आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, तथा सांस्कृतिक विकास को प्रोत्साहित करना है। इसका कार्यक्षेत्र व्यापक रूप से कृषि, पर्यावरण संरक्षण, महिला उत्थान, विज्ञान व तकनीक एवं आपदा प्रबंधन तक विस्तृत है।

बिम्सटेक के उद्देश्य व कार्यक्षेत्र: बिम्सटेक का लक्ष्य अधिक तकनीकी तथा अर्थव्यवस्था केंद्रित है। यह अपने कार्यक्षेत्र में व्यापार, निवेश, ऊर्जा सहयोग, परिवहन, पर्यटन एवं मानव संसाधन विकास पर बल देता है। इसकी प्राथमिकता त्वरित व व्यावहारिक परिणाम प्रदत्त करना है।

क्रियान्वयन तन्त्र

सार्क का सहयोग तंत्र: यद्यपि सार्क द्वारा **'दक्षिण एशियाई वरीयता व्यापार समझौता (SAFTA)'** जैसे व्यापार समझौते किए गए, तथापि उनका क्रियान्वयन सीमित ही रहा। इसके अतिरिक्त कई विशिष्ट केंद्रों तथा कार्य समूहों के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग स्थापित किया गया है।

बिम्सटेक का सहयोग तंत्र: बिम्सटेक सदस्य देशों को निर्धारित क्षेत्रों का नेतृत्व प्रदान करता है। इसके अन्तर्गत व्यापार, सामरिक सुरक्षा, पर्यावरण तथा आपदा प्रबंधन हेतु कार्य समूह सक्रिय हैं। इसका झुकाव त्वरित एवं परिणामोन्मुख सहयोग की ओर है।

क्षमता तथा दुर्बलतायें: सार्क तथा बिम्सटेक की क्षमताएँ व सीमाएँ इस प्रकार हैं -

सार्क की क्षमता एवं सीमाएँ: सार्क की व्यापक सदस्यता तथा स्थापित ढांचा इसकी शक्ति हैं, परन्तु भारत-पाकिस्तान द्वंद्व, आर्थिक असमताएं एवं असहमति या अनुबन्ध के अभाव वाली स्थितियाँ इसकी प्रगति में मुख्य बाधाएँ हैं।

बिम्सटेक की क्षमता एवं सीमाएँ: बिम्सटेक का लचीलापन, सीमा पार सहयोग तथा क्षेत्रीय नेतृत्व प्रतिरूप इसे व्यवहारिक बनाता है, परन्तु इसकी संस्थागत अपरिपक्वता एवं सीमित सदस्यता इसकी प्रमुख दुर्बलतायें हैं।

प्रमुख उपलब्धियाँ

सार्क तथा बिम्सटेक दोनों संगठनों की प्रमुख उपलब्धियाँ अथवा सफलताएँ अधोलिखित हैं -

सार्क की सफलताएँ: दक्षिण एशियाई वरीयता व्यापार समझौता, कृषि तथा आपदा प्रबंधन केन्द्र जैसी संस्थाएँ सार्क की उपलब्धियां हैं। सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी सार्क ने योगदान दिया है।

बिम्सटेक की सफलताएँ: पर्यटन, समुद्री सुरक्षा, आपदा प्रबंधन तथा परिवहन जैसे क्षेत्रों में बिम्सटेक ने प्रगति की है।

चुनौतियाँ: इन दोनों संगठनों की प्रमुख चुनौतियाँ अग्रलिखित हैं -

सार्क की मुख्य चुनौतियां: भारत-पाकिस्तान के मध्य तीव्र होता तनाव, आतंकवाद, सदस्य राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक अविश्वास व राजनीतिक अस्थिरता, न्यून अंतरक्षेत्रीय व्यापार एवं यूरोपीय संघ सदृश अन्य क्षेत्रीय समूहों की तुलना में न्यून आर्थिक एकीकरण प्रमुख समस्याएँ हैं, जिसके परिणामस्वरूप शिखर सम्मेलन एवं सार्क मुक्त व्यापार समझौता जैसे महत्वाकांक्षी लक्ष्यों का क्रियान्वयन बाधित होता है। इसके अतिरिक्त निर्धनता, आधारभूत संरचना का अभाव तथा भू-राजनीतिक दबाव भी संगठन के विकास को रोकने वाली प्रमुख बाधाएं हैं। भारत व पाकिस्तान सार्क के प्रमुख सदस्य राष्ट्र हैं। इन दोनों देशों के मध्य दीर्घ समय से व्याप्त विवाद तथा संघर्ष सार्क सम्मेलनों व सहयोग को रोकते हैं, जिससे कई शिखर सम्मेलन स्थगित हो चुके हैं। सीमा पार आतंकवाद एवं चरमपंथ ने क्षेत्रीय सहयोग को गंभीर रूप से बाधित किया है, जिससे भारत जैसे सदस्य राष्ट्र प्रभावी सहयोग से संकोच करते हैं। सदस्य राष्ट्रों के आंतरिक संघर्ष, जैसे अफगानिस्तान में अस्थिरता और राजनीतिक असहमति, संगठन की प्रभावशीलता को दुर्बल करते हैं। सार्क मुक्त व्यापार समझौता तथा अन्य आर्थिक पहल संतोषजनक रीति से लागू नहीं हो पाई हैं, जिससे अंतर-क्षेत्रीय व्यापार न्यून है। भारत व पाकिस्तान के मध्य व्याप्त तनाव एवं चीन जैसे बाहय शक्तियों के भू-राजनीतिक प्रभाव के कारण नेतृत्व संकट गहराया है। भौतिक, इलेक्ट्रॉनिक तथा ज्ञान के क्षेत्र में सदस्य राष्ट्रों के मध्य संपर्कता अथवा जुड़ाव का अभाव है, जोकि क्षेत्रीय विकास हेतु एक बाधा है। यूरोपीय संघ की भाँति एक सुदृढ़ क्षेत्रीय संगठन बनने में सार्क विफल रहा है, क्योंकि सामान्य सहमति पर निर्भरता एवं सदस्य राष्ट्रों के मध्य विद्यमान मतभेद प्रगति को अवरुद्ध करते हैं। गरीबी, कुपोषण, प्राकृतिक आपदाएं तथा स्वास्थ्य जैसी सामान्य समस्याओं के होते हुए भी प्रभावी समाधान नहीं हो पा रहे हैं। संक्षेप में, भारत-पाकिस्तान के मध्य व्याप्त राजनीतिक कलह सार्क की सबसे बड़ी दुर्बलता है, जिसके कारण यह संगठन 'दक्षिण एशिया में सहयोग तथा विकास' के अपने उद्देश्य को प्रभावी रूप से प्राप्त करने में विफल रहा है।

बिम्सटेक की मुख्य चुनौतियां: बिम्सटेक की प्रमुख चुनौतियों के अन्तर्गत संस्थागत व वित्तीय दुर्बलता, मुक्त व्यापार समझौता व सम्पर्क परियोजनाओं में विलम्ब, सदस्य राष्ट्रों के मध्य राजनीतिक अस्थिरता एवं पारस्परिक हितों में टकराव, सीमित वित्तीय प्रतिबद्धता तथा बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के माध्यम से चीन के प्रभाव में होती हुई वृद्धि सम्मिलित हैं, जोकि इसके क्षेत्रीय सहयोग हेतु निर्धारित लक्ष्यों में विशेषतया द्विपक्षीय मुद्दों एवं आसियान सदृश अन्य संगठनों को प्राथमिकता देने के कारण बाधा उत्पन्न करती हैं। एक सुदृढ़ तथा पर्याप्त वित्तीय स्थिति वाले स्थायी सचिवालय के अभाव में समन्वय कार्य कठिन होता है। पर्याप्त वित्तीय योगदान नहीं होने के कारण व्यापक स्तर की परियोजनाओं को लागू करने में बाधा उत्पन्न होती है। मुक्त व्यापार समझौता, मोटर वाहन एवं तटीय नौवहन अनुबन्धों के सम्बन्ध में गतिरोध व्याप्त है। शिखर सम्मेलन व अधिवेशन नियमित रूप से सम्पन्न नहीं हो पाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कार्य में मन्द प्रगति होती है। म्यांमार, श्रीलंका तथा नेपाल जैसे राष्ट्रों में क्रमशः गृहयुद्ध, आर्थिक संकट व राजनीतिक अस्थिरता क्षेत्रीय सहयोग को प्रभावित करती है। कुछ सदस्य राष्ट्र आसियान अथवा अपने द्विपक्षीय सम्बन्धों को बिम्सटेक से अधिक वरीयता देते हैं। रोहिंग्या जैसे शरणार्थी संकटों एवं सीमा विवादों से तनाव उत्पन्न होता हैं। **'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव'** के माध्यम से क्षेत्र में चीन के प्रभाव में होती हुई वृद्धि भारत हेतु एक रणनीतिक चुनौती है, क्योंकि अधिकांश सदस्य राष्ट्र बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का भाग हैं। चीन की **'बांग्लादेश-चीन-भारत-म्यांमार'** आर्थिक गलियारे जैसी परियोजनाएं बिम्सटेक हेतु प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करती हैं। बिम्सटेक का क्षेत्रीय व्यापार अभी भी न्यून है। सदस्य राष्ट्रों में पारस्परिक अंतर-क्षेत्रीय व्यापार भिन्न-भिन्न है। ये राष्ट्र प्राय: असंबद्ध बिम्सटेक राष्ट्रों से वस्तु आयात को प्राथमिकता देते हैं। व्यापार सुविधा तथा बांग्लादेश-भूटान-भारत-नेपाल मोटर वाहन अनुबन्ध जैसी सम्पर्क परियोजनाओं में विलम्ब हो रहा है। बिम्सटेक राष्ट्रों द्वारा अभी भी एक संयुक्त एवं आकर्षक एकीकृत तटीय नौप्रेक्षण पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करना शेष है। इसी प्रकार की चुनौतियों के अन्तर्गत क्षेत्रीय सीमाओं के उल्लंघन पर करने मछुआरों को बन्दी बनाना भी सम्मिलित है।

निष्कर्ष: सार्क तथा बिम्सटेक एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं। भारत-पाकिस्तान तनाव, आर्थिक असमानताएं, सीमांकन विवाद तथा संस्थागत दुर्बलताएँ दोनों संगठनों को प्रभावित करती हैं। सार्क में शिखर सम्मेलन स्थगित होना तथा बिम्सटेक के सीमित संसाधन मुख्य समस्याएं हैं। जहाँ एक ओर सार्क को भारत-पाकिस्तान के मध्य व्याप्त तनाव को दूर कर पुनः सक्रिय होने की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर बिम्सटेक को आर्थिक एकीकरण एवं संस्थागत सुदृढ़ता पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यद्यपि दोनों संगठन दक्षिण व दक्षिण-पूर्व एशिया हेतु पृथक-पृथक परन्तु पूरक क्षेत्रीय मंच हैं तथापि उनका संयुक्त उपयोग क्षेत्रीय सहयोग में वृद्धि कर सकता है। अतएव हम निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि सार्क तथा बिम्सटेक दोनों के समन्वित सशक्तिकरण से क्षेत्रीय एकीकरण एवं विकास को प्रोत्साहन की प्राप्ति हो सकती है।

सन्दर्भ सूची :

Vol.-2, Issue-1 (January-March 2026), pp.22-28, ISSN: 3107-5088,www.cognitivethinking.in

- बर्नेट, रसेल जे., (2020), 'अंतरराष्ट्रीय संगठन : सिद्धांत और व्यवहार', एकेडमिक प्रेस, नई दिल्ली।
- टेस्टबुक, (2025, अक्टूबर 31), सार्क के उद्देश्य: अर्थ, कार्य, विशेषताएँ एवं महत्व।
- https://testbook.com/ugc-net-commerce/objectives-of-saarc, विकिपीडिया, (2023), बिम्सटेक।
- https://en.wikipedia.org/wiki/BIMSTEC, भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, (2020), सार्क की संरचना।
- https://www.saarc-sec.org/index.php/about-saarc/saarc-structure/council-of-ministers/35-saarc-structure, वजिराम अंद्रावी, (2025, जुलाई 27), बिम्सटेक राष्ट्र 2025, सहयोग के क्षेत्र।
- https://vajiramandravi.com/current-affairs/bimstec-countries/, दृष्टि IAS, (2025, अप्रैल 21), मुख्य उत्तर लेखन अभ्यास।
- https://www.drishtiias.com/mains-practice-question/question-8765, पॉलिटिक्स फॉर इंडिया, (2025, जून 15), सार्क और बिम्सटेक – पॉलिटिक्स फॉर इंडिया।
- https://politicsforindia.com/3-1-saarc-and-bimstec-psir/, सिविल्स डेली, (2022, दिसंबर 13), सार्क बनाम बिम्सटेक।
- https://www.civilsdaily.com/news/saarc-to-bimstec/, भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, (2022), बिम्सटेक चार्टर।
- https://www.mea.gov.in/Portal/LegalTreatiesDoc/022M3847.pdf, इंडिया फाउंडेशन, (अज्ञात), भारतीय महासागर क्षेत्र में बिम्सटेक की भूमिका।
- https://indiafoundation.in/articles-and-commentaries/role-of-bimstec-in-the-indian-ocean-region/, कट्स सीआईटीईई, (अज्ञात), सार्क और बिम्सटेक – क्षेत्रीय सहयोग के अनुभव को समझना।
- https://cuts-citee.org/pdf/Briefing_Paper08-Understanding_their_Experience_in_Regional_Cooperation.pdf.

Declaration by Author (s): *"I hereby declare that this manuscript is my original work, free from plagiarism, and that all sources and any use of Artificial Intelligence tools for content generation or editing have been fully disclosed and verified for accuracy."*